॥ प्राक्कथन ॥

'प्राक्कथन'

बचपन में मैंने एक बार गाते हुए सूरदास और गायन सुननेवाले बालकृष्ण के एक बड़े चित्र को देखा था। तब मुझे नजाने क्यों उस गायक को लेकर बड़ी जिज्ञासा उत्पन्न हुई थी। माध्यमिक स्कूल में मुझे वह गायक महान कवि सूरदास थे इस बातका पता चला और मुझे सूर की रचनाओं ने अपनी ओर आकर्षित कर लिया। महाविद्यालय में मैंने "सूर सूर, तुलसी ससी" की बात पढी और कविवर सूरदास मेरे चिंतन के विषय बने। जब मैंने एम्. फिल्. उपाधि की बात सोची तो सूर को ही प्रथम चुना। हमारे विद्यार्थी प्रिय आदरणीय गुरुवर्य प्रा. शरद कुंभारकरजी से मैंने इस संबंध में चर्चा की उन्होंने सहर्ष अनुमति के साथ अपना मौलिक और प्रौढ मार्गदर्शन कर मेरे विचारों को निश्चित दिशा दी।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्न प्रश्न थे —

१] महाकवि सूरदास का जीवन और उनके अंधत्व के बारे में अलग-अलग विद्वानों की राय क्या है ?

२] सूरदास की कौन कौनसी रचनायें हैं ? उनमें वल्लभ संप्रदाय का दार्शनिक विवेचन किस प्रकार हुआ है ?

३] सूरदास की ग्रंथ रचना के प्रेरक ग्रंथ "भागवत" में कृष्ण कथा का स्वरूप क्या है ? सूरदास वात्सल्य वर्णन के सर्वश्रेष्ठ कवि तो हैं ही पर क्या वे संयोग एवं वियोग शृंगार वर्णन में भी उतनी ही कुशलता प्राप्त कर सके हैं ?

४] "भ्रमरगीत" की रचना के दौरान महाकवि सूरदास ने कृष्ण विरहिणी गोपियों की मनोदशा का वर्णन किस प्रकार किया होगा ?

५] भ्रमरगीत की रचना में सूरदास का उद्देश्य क्या रहा होगा ? साथ ही सूरदास की भक्ति भावना का स्वरूप क्या है ?

इन प्रश्नों या जिज्ञासाओं की पूर्ति हेतु मैंने अपने लघु शोध प्रबंध की निम्न प्रकार रूप रेखा बनाई -

१] आमुख :- सूरदास का जीवन, रचनाएँ, वल्लभ संप्रदाय, पुष्टिसंप्रदाय का दार्शनिक विवेचन |

२] प्रथम अध्याय :- भागवती कृष्ण कथा, दशम स्कंध की कथा, भ्रमरगीत का विषय और स्वरूप ।

३] द्वितीय अध्याय :- सूरदास के "भ्रमरगीत" का परिचय और उसका अंतरंग, "भ्रमरगीत" के पदों में अभिव्यक्त गोपियों की मनोदशा एवं भक्ति का चित्रण ।

४] तृतीय अध्याय :- भ्रमरगीत की गोपियों के उपालंभ वचन ।

उ प सं हा र :-

मुझे यह लिखते हुये बडी खुशी होती है कि मुझे मेरे मार्गदर्शक प्रा. शारद कणाबरकरजी से सआशिर्वाद संतोषजनक मार्गदर्शन एवं प्रेरणा मिली जिससे मैं अपने प्रश्नों के उत्तर ढूँढ सका । जो निष्कर्ष मेरे सामने आया उसे मैंने उपसंहार में रखा है । अंत में संदर्भ ग्रंथों की सूची भी जोड दी है ।

एम्. फिल्. की उपाधि के लिए मुझे मेरे गुरुवर्य डॉ. व्ही. एन. कुलकर्णी, प्राचार्य डॉ. बी. ए. पाटील, तथा प्रा. ए.ए. दातार, प्रा. एस. एस. किट्टद इ. का भी हार्दिक सहकार्य तथा प्रोत्साहन मिला । इन सब के प्रति मैं हार्दिक आभारी हूँ । मुझे इस प्रबंध को टंकलिखित करने में काफी कठिनाइयाँ आयीं पर श्री. संजय कुलकर्णी ने निर्दोष टंकलेखन का प्रयत्न कर मुझे विशेष सहयोग दिया अतः मैं उनका भी आभारी हूँ ।

आदरणीय डॉ. द्रविडजी , डॉ. व्ही. के. मोरेजी, प्रा. रजनी भागवत, प्रा. निवले, प्रा. वेदपाठक इ. के. आशीर्वाद और सहायता के लिये मैं उनका

हृदयसे आभार व्यक्त करता हूँ। हमारे विलिंग्डन कॉलेज के ग्रंथपाल श्री. रास्तेजी ने भी मुझे आवश्यक ग्रंथ सहायता देकर अनमोल योग दिया अत: मैं उन्हें भी धन्यवाद देता हूँ और भविष्य में भी इन सब से ऐसाही योगदान मिलता रहेगा ऐसी कामना करते हुए समादरणीय समीक्षकों के सामने यह लघु शोध प्रबंध अवलोकनार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

000